OVER THREE MILLION COPIES SOLD

जॉर्डन बी. पीटरसन

12 RULES FOR LIFE

जीवन के १२ नियम

अव्यवस्था से व्यवस्था की ओर...

'वर्तमान समय में पश्चिमी जगत के
सबसे प्रभावशाली बुद्धिजीवी'

~ न्यू यॉर्क टाइम्स

जीवन के **12** नियम

अव्यवस्था से व्यवस्था की ओर...

जॉर्डन बी. पीटरसन

प्रकाशक : वॉव पब्लिशिंग्ज् प्रा. लि. पुणे

प्रथम आवृत्ती : दिसंबर 2019

अनुवादक : अभिषेक शुक्ला

ISBN : 978-81-943200-4-3

Copyright @ 2018 Dr. Jordan B. Peterson by arrangement with CookeMcDermid Agency and The Cooke Agency International. Originally published in English by Random House Canada

Hindi Translation Copyright © 2019 by WOW Publishings Pvt. Ltd.

All rights reserved.

सर्वाधिकार सुरक्षित

वॉव पब्लिशिंग्ज् प्रा. लि. द्वारा प्रकाशित यह पुस्तक इस शर्त पर विक्रय की जा रही है कि प्रकाशक की लिखित पूर्वानुमति के बिना इसे व्यावसायिक अथवा अन्य किसी भी रूप में उपयोग नहीं किया जा सकता। इसे पुन: प्रकाशित कर बेचा या किराए पर नहीं दिया जा सकता तथा जिल्दबंद या खुले किसी भी अन्य रूप में पाठकों के मध्य इसका परिचालन नहीं किया जा सकता। ये सभी शर्तें पुस्तक के खरीददार पर भी लागू होंगी। इस संदर्भ में सभी प्रकाशनाधिकार सुरक्षित हैं। इस पुस्तक का आंशिक रूप में पुन: प्रकाशन या पुन: प्रकाशनार्थ अपने रिकॉर्ड में सुरक्षित रखने, इसे पुन: प्रस्तुत करने की प्रति अपनाने, इसका अनूदित रूप तैयार करने अथवा इलेक्ट्रॉनिक, मैकेनिकल, फोटोकॉपी और रिकॉर्डिंग आदि किसी भी पद्धति से इसका उपयोग करने हेतु समस्त प्रकाशनाधिकार रखनेवाले अधिकारी तथा पुस्तक के प्रकाशक की पूर्वानुमति लेना अनिवार्य है।

'12 Rules for Life' इस अंग्रेजी पुस्तक का हिंदी अनुवाद

12 Rules for Life - An Antidote to Chaos

by Jordan B. Peterson

विषय सूची

प्रस्तावना

भूमिका

1 कंधे तानकर सीधे खड़े हों

2 स्वयं को उस व्यक्ति की तरह देखें, जिसकी सहायता करना आपकी निजी जिम्मेदारी है

3 जो लोग आपका हित चाहते हैं, उन्हें अपना दोस्त बना लें

4 अपनी तुलना अपने पिछले कल से करें, न कि दूसरों से

5 अपने बच्चों को ऐसा कुछ न करने दें, जिससे आप उन्हें नापसंद करने लगें

6 दुनिया की आलोचना करने से पहले अपना घर संभालें

7 वह हासिल करने की कोशिश करें, जो अर्थपूर्ण हो, न कि जो सुविधाजनक हो

8 हमेशा सच बोलें या कम से कम झूठ न बोलें

9 यह मानकर चलें कि आप जिस व्यक्ति से बातचीत कर रहे हैं, शायद वह कुछ ऐसा जानता हो, जो आपको न पता हो

10 सटीक और स्पष्ट शब्दों का उपयोग करें

11 जब बच्चें स्केटबोर्डिंग कर रहे हों तो उन्हें परेशान न करें

12 अगर रास्ते में कोई बिल्ली नज़र आए तो उसे पाल लें

प्रस्तावना

कुछ और नियम? वाकई? क्या हमारी अनूठी व्यक्तिगत स्थिति को ध्यान में न रखनेवाले ऐसे अमूर्त नियमों के बिना भी, हमारा जीवन पहले से ही काफी जटिल और सीमित नहीं है? और चूँकि हम सबके मस्तिष्क हमारे जीवन के अनुभवों के आधार पर बिलकुल अलग-अलग ढंग से विकसित होते हैं, तो फिर ऐसे में यह उम्मीद ही क्यों करना कि कुछ और नियम हमारे लिए सहायक हो सकते हैं?

लोगों को नियमों में आस्था नहीं होती। यहाँ तक कि बाइबिल में भी, जब एक लंबी अनुपस्थिति के बाद मूसा टेन कमांडमेंट्स की सिल्लियों के साथ पहाड़ की ऊँचाई से वापस आता है, तो देखता है कि ईजराइल के लोगों के बीच दुश्मनी हो गई है। वे सब फरौन के दास रह चुके थे और चार सौ सालों तक उसके अत्याचारी नियम-कानूनों के बंधक रह चुके थे। फिर मूसा ने उन्हें चालीस सालों तक कठोर रेगिस्तान को सहने के लिए विवश किया, ताकि उनके अंदर की दासता खत्म कर उन्हें शुद्ध किया जा सके। आखिरकार मुक्त होने के बाद वे इतने अनियंत्रित और स्वच्छंद हो चुके थे कि अब उन पर किसी की लगाम नहीं थी। अब वे एक सुनहरे बछड़े की मूर्ति के चारों ओर बेतहाशा नाचते रहते और अपनी शारीरिक भ्रष्टता का खुला प्रदर्शन करते।

'मेरे पास एक अच्छी और एक बुरी खबर है,' कानूनविद् (कानून बनानेवाला) ने उन्हें चिल्लाते हुए बताया। 'तुम इनमें से कौन सी खबर पहले सुनना चाहोगे?'

'पहले अच्छी खबर।' सारे सुखवादी चिल्लाए।

'मैंने उसके 15 कमांडमेंट्स (धर्मादेश) की संख्या कम करके 10 करवा दी है।'

'जय हो!' उपद्रवी भीड़ चीखी, 'और बुरी खबर क्या है?'

'व्यभिचार अब भी इसमें शामिल है।'

तो नियम फिर भी रहेंगे ही, पर कृपा करके बहुत सारे नियम नहीं होने चाहिए। जब नियम हमारे भले के लिए होते हैं तब भी हमें उनके प्रति झिझक महसूस होती है। अगर हम उत्साही प्रकृति के हैं, अगर हमारे पास चरित्र है, तो नियम हमें उन बंधनों जैसे लगते हैं, जो जीवन में हमारे गौरव और स्वतंत्रता का अपमान करते हैं। दूसरों के नियमों के आधार पर हमारा जीवन क्यों आँका जाए?

और हमारा आँकलन तो हो ही रहा है। आखिरकार, मूसा को ईश्वर ने 'दस सुझाव' नहीं बल्कि धर्मादेश दिए थे। अगर मैं एक स्वतंत्र व्यक्ति हूँ, तो किसी भी धर्मादेश को सुनकर मेरी पहली प्रतिक्रिया यही होगी कि 'कोई और, यहाँ तक कि ईश्वर भी, मुझे यह नहीं बता सकता कि मुझे क्या करना चाहिए और क्या नहीं।' भले ही उसमें मेरी भलाई हो। पर सुनहरे बछड़े की कहानी हमें याद दिलाती है कि बिना नियमों के हम बहुत जल्द अपने जुनून के गुलाम बन जाते हैं और इसमें मुक्ति जैसी कोई बात नहीं है।

यह कहानी कुछ अन्य संकेत भी देती है : जब हम पर कोई बंधन नहीं रह जाता और हम अपने अप्रशिक्षित तरीकों से निर्णय लेने के लिए स्वतंत्र हो जाते हैं, तो हम जल्द ही उन गुणों की उपासना करने लगते हैं, जो हमारे स्तर से भी निम्न हों। इस मामले में एक कृत्रिम पशु हमारे अंदर की पाशविक प्रवृत्ति को बिलकुल अनियंत्रित ढंग से सामने ले आता है। यह प्राचीन हिब्रू कहानी स्पष्ट करती है कि हमारे पूर्वज, हमारे मानकों को ऊँचा करने और अवलोकन को गहन बनानेवाले नियमों की अनुपस्थिति में, हमारे सभ्य व्यवहार की संभावनाओं के बारे में क्या महसूस करते थे।

बाइबिल की इस कहानी की एक बात बहुत ही स्पष्ट है कि ये अपने नियमों को किसी वकील, कानून निर्माता

या प्रशासक की तरह सूचीबद्ध नहीं करती। बल्कि यह उन्हें एक ऐसी नाटकीय कहानी से जोड़कर प्रस्तुत करती है, जो इस बात का चित्रण करती है कि हमारे लिए वे नियम क्यों ज़रूरी हैं। इससे हमें उन्हें समझने में आसानी होती है। ठीक इसी तरह प्रोफेसर जॉर्डन पीटरसन ने भी अपने 12 नियमों को यूँ ही सामने नहीं रखा बल्कि उनके साथ कहानियाँ भी सुनाईं हैं। जिसके चलते विभिन्न क्षेत्रों से जुड़े उनके ज्ञान को ग्रहण करना हमारे लिए आसान हो जाता है। इस प्रकार वे इस महत्वपूर्ण बात पर प्रकाश डालते हैं कि सबसे सर्वश्रेष्ठ नियम अंतत: हमें बंधनों में बाँधने के बजाय, हमारे लक्ष्य को आसान और हमारे जीवन को अधिक स्वतंत्र व संपूर्ण बनाते हैं।

जॉर्डन पीटरसन से पहली मुलाकात

मैं जॉर्डन पीटरसन से पहली बार 12 सितंबर 2004 को मिला था। यह मुलाकात हमारे दो दोस्तों, टी.वी. निर्माता वोडेक ज़ीमबर्ग और चिकित्सा से जुड़ी एस्टेरा बीकर के घर पर हुई थी। यह वोडेक के जन्मदिन की पार्टी का अवसर था। वोडेक और एस्टेरा, दोनों पोलिश प्रवासी हैं। वे दोनों ही सोवियत साम्राज्य में पले-बढ़े थे, जहाँ कुछ विषय चर्चा के दायरे से बाहर माने जाते थे और कुछ विशेष सामाजिक व्यवस्थाओं व दार्शनिक विचारों पर (इस सूची में तत्कालीन सोवियत शासन भी शामिल है) सामान्य तौर पर सवाल उठाना भी एक बड़ी मुसीबत मोल लेने के बराबर है।

लेकिन ये दोनों ऐसी शानदार पार्टियों के मेजबान थे, जहाँ सहज और ईमानदारी भरी बातचीत होती थी, हर किसी को अपने मन की बात खुलकर कहने की छूट थी और जहाँ हर कोई सामनेवाले की बात को शिष्टाचार पूर्वक सुनता था। यहाँ का नियम था, 'अपने मन की कहो।' और अगर बातचीत राजनीतिक विषयों की ओर मुड़ जाए तो अलग-अलग राजनीतिक झुकाववाले लोग भी सामनेवाले की बात सुनने के लिए जिस प्रकार तैयार रहते थे, वह आजकल काफी दुर्लभ होता जा रहा है। हालाँकि राजनीति की बातें सुनने के लिए मैं हमेशा तैयार रहता था। कई बार वोडेक के अपने विचार और सच्चाइयाँ अचानक उसके मुँह से बाहर आ जाते थे और साथ ही उसके ठहाके भी। फिर वह उस व्यक्ति को गले लगा लेता, जिसकी बातों पर उसने ठहाका लगाया और उसे अपने मन की बात को और अधिक खुले अंदाज में सामने रखने के लिए उकसाता रहता। यही उन पार्टियों की सबसे अच्छी बात होती थी। वोडेक की स्पष्टता और उसकी गर्मजोशी पार्टियों को और दिलचस्प बना देती थीं। इसी दौरान एस्टेरा की जिंदादिल आवाज भी श्रोताओं तक पहुँचती रहती थी। लोगों के मुँह से सच्चाइयों का अचानक बाहर आना वहाँ के माहौल की सहजता को कम करने के बजाय अन्य लोगों को अपनी-अपनी सच्चाइयों का विस्फोट करने के लिए उत्साहित करता था। यह हम सबके लिए बड़ा ही मुक्तिभरा अनुभव होता था, जहाँ ठहाकों की कोई कमी नहीं थी और हम सबकी शाम अधिक दिलचस्प हो जाती थी। क्योंकि वोडेक और एस्टेरा जैसे जिंदादिल और खुले नज़रिएवाले पूर्वी यूरोपीय लोगों के साथ आपको यह स्पष्ट पता होता था कि आप किस प्रकार के लोगों के साथ समय बिता रहे हैं। उनका खुला नज़रिया वाकई माहौल में जान डाल देता था।

उपन्यासकार होनोर डी बाल्ज़ेक ने एक बार फ्रांस की पार्टीज का उल्लेख करते हुए कहा था कि वहाँ एक पार्टी में दो-दो पार्टीज चल रही होती हैं। पार्टी की शुरुआत में मौजूद ज़्यादातर मेहमान वहाँ के माहौल से ऊब जाते थे पर फिर भी यह दिखावा करते रहते थे कि उन्हें वहाँ बड़ा आनंद आ रहा है। ज़्यादातर लोग इस उम्मीद में आते थे कि पार्टी में उनकी मुलाकात विपरीत लिंग के किसी ऐसे व्यक्ति से हो जाएगी, जिसके साथ समय बिताकर वे स्वयं के बारे में अच्छा महसूस करेंगे। पार्टी का अंतिम दौर आते-आते ज़्यादातर मेहमान जा चुके होते थे। इसके बाद शुरू होती थी, दूसरी पार्टी यानी असली पार्टी। फिर लोग एक-दूसरे से खुलकर बातें करने लगते और पार्टी के शुरुआती दौर के ऊबे माहौल की जगह बार-बार लगते तेज ठहाके ले लेते। इन फ्रांसीसी पार्टीज में जो अपनापन और खुलापन देर रात के बाद आना शुरू होता था, वह एस्टेरा और वोडेक की पार्टीज में पहला कदम रखते ही महसूस होने लगता था।

वोडेक स्लेटी बालोंवाला एक बेहद आकर्षक व्यक्ति था, जो करीब-करीब हमेशा ही ऐसे संभावित बुद्धिजीवियों की तलाश में रहता था, जो टी.वी. कैमरा के सामने खुलकर और प्रामाणिक अंदाज में बोल सकें। यह तभी संभव था, जब आप सचमुच एक प्रामाणिक व्यक्ति हों (कैमरा आपकी ऐसी विशिष्टताओं को बहुत जल्दी पकड़ लेता है)। इस प्रकार के लोगों को वह अक्सर अपने घर में लगनेवाली मंडलियों में आमंत्रित करता था। उस दिन वोडेक मेरी ही यूनिवर्सिटी के मनोविज्ञान के एक प्रोफेसर को लेकर आया था, जिसमें ये सारी खूबियाँ थीं और जो बुद्धि व

भावनात्मकता का संतुलित मिश्रण था। वोडेक वह पहला व्यक्ति था, जो जॉर्डन पीटरसन को कैमरे के सामने लेकर आया और उन्हें एक ऐसे शिक्षक के रूप में देखा, जो हमेशा अपने छात्रों की खोज में रहता है क्योंकि जॉर्डन किसी भी चीज़ को विस्तार से समझाने के लिए हमेशा तैयार रहते थे। वोडेक के लिए अच्छी बात यह रही कि न सिर्फ जॉर्डन को कैमरे का सामना करना पसंद आया बल्कि कैमरे को भी जॉर्डन पीटरसन अच्छे लगे।

उस दिन वोडेक और एस्टेरा के घर के बगीचे में एक बड़ा टेबल लगा हुआ था, जिसे घेरकर वही बातूनी और दक्ष लोग बैठे हुए थे, जो वोडेक की इन मंडलियों में अक्सर नज़र आते थे। हालाँकि हम लोग उन ढेर सारी मधुमक्खियों से परेशान थे, जो उड़ते-उड़ते हमारे बीच आ गई थीं। जबकि हमारे साथ ही पैरों में काऊबॉय बूट्स पहने और बोलचाल में एल्बर्टा के लहजेवाले मनोविज्ञान के एक प्रोफेसर बैठे हुए थे, जो बड़ी सहजता से मधुमक्खियों को नज़रअंदाज करते हुए अपनी बात कह रहे थे। वे लगातार बोलते जा रहे थे, जबकि हम सब मधुमक्खियों से बचने की कोशिश में लगे हुए थे, पर इसके साथ-साथ हम उनकी बातों को गौर से सुनने की कोशिश भी कर रहे थे। क्योंकि वे हमारी मंडली में नज़र आनेवाला नया चेहरा होने के बावजूद खासे दिलचस्प व्यक्ति थे।

उनमें एक अलबेली आदत थी। वे सबसे गहनतम सवालों पर भी कुछ इस अंदाज में चर्चा करते थे, मानों बस यूँ ही गपशप कर रहे हों, फिर भले ही उनके सामने बैठा व्यक्ति कोई भी हो - उस मंडली में बैठे ज़्यादातर लोग उनसे अभी-अभी परिचित हुए थे। उनकी इस आदत का वर्णन इस प्रकार भी किया जा सकता है कि जब वे यूँ ही गपशप कर रहे होते - जैसे 'आप वोडेक और एस्टेरा को कैसे जानते हैं?' या 'मैं एक जमाने में मधुमक्खियाँ पाला करता था, इसीलिए उनकी मौजूदगी से मुझे कोई दिक्कत नहीं होती' - तो बीच-बीच में अधिक गंभीर विषयों की ओर मुड़ जाते और यह इतनी तेजी से होता कि उतनी देर में आप अपनी पलकें भी न झपका सकें।

इस तरह के सवालों पर आमतौर पर उन्हीं पार्टीज में चर्चा होती है, जहाँ आए मेहमानों में ज़्यादातर प्रोफेसर्स और पेशेवर लोग हों। पर वहाँ भी ऐसी चर्चा किसी कोने में खड़े किन्हीं दो विशेषज्ञों की आपसी बातचीत तक ही सीमित रहती है। और अगर ऐसी चर्चा किसी बड़े समूह में होती है, तो आमतौर पर उनके बीच कोई आत्मसंतुष्ट व्यक्ति ज़रूर मौजूद होता, जो इस चर्चा को जारी रखने के लिए ईंधन का काम कर रहा होता है। जबकि जॉर्डन पीटरसन विद्वान होने के बावजूद ज़रा भी अभिमानी नहीं लग रहे थे। उनके अंदर अपने ज्ञान को लेकर कोई घमंड नज़र नहीं आ रहा था। बल्कि वे तो उस उत्साही बच्चे जैसे थे, जिसने अभी-अभी कोई नई चीज़ सीखी है और अब वह उसे हर किसी से साझा करने के लिए उतावला है। उन्हें देखकर लगता था, मानों बच्चों की तरह ही उनका भी यह मानना हो कि अगर उन्हें कोई चीज़ दिलचस्प लग रही है, तो वह दूसरों को भी दिलचस्प लग सकती है।

इस काऊबॉय में एक किस्म का लड़कपन था। जिस अंदाज में वे अलग-अलग विषयों पर हमसे बातें कर रहे थे, उसे देखकर लग रहा था, मानो हम सब किसी कस्बे या किसी बड़े परिवार में एक साथ बड़े हुए हों और इंसानी अस्तित्व की समस्याओं के बारे में निरंतर एक साथ सोच-विचार करते आए हों।

पर जॉर्डन पीटरसन कोई 'सनकी' या 'झक्की' व्यक्ति नहीं लग रहे थे। उनके व्यक्तित्व में पर्याप्त पारंपरिक विशिष्टताएँ नज़र आ रही थीं। वे हार्वर्ड यूनिवर्सिटी में प्रोफेसर रह चुके थे और वे एक सज्जन व्यक्ति थे (जैसे कि ज्यादातर काऊबॉय होते हैं)। हालाँकि वे 1950 के ग्रामीण इलाकों के अंदाज में डैम (लानत है) और ब्लडी (भयंकर) जैसे शब्दों का काफी इस्तेमाल कर रहे थे। फिर भी वहाँ हर कोई मंत्रमुग्ध होकर उनकी बातें सुन रहा था। क्योंकि वे उन सवालों के बारे में तथ्यों के साथ बात कर रहे थे, जो वहाँ बैठे हर व्यक्ति के मन में उठते रहते थे।

एक ऐसा व्यक्ति, जो इतना विद्वान होने के बाद भी बिना कोई काँट-छाँट किए अपनी बात कहता है, उसके साथ बैठना अपने आपमें बड़ा ही मुक्तिदायक अनुभव था। वे जरा मृदु सोचवाले थे और ऐसा लगता था कि उन्हें और प्रबलता से सोच-विचार करना चाहिए। हालाँकि प्रबलता के चलते तेजी से सोच-विचार करना जरा मुश्किल हो जाता है और जॉर्डन के सोच-विचार करने की गति अच्छी-खासी थी। उनके जोशीले विचार लगातार सामने आ रहे थे। पर अपने विचारों पर अड़े रहनेवाले ज़्यादातर शिक्षाविदों के विपरीत जॉर्डन के विचारों को जब कोई चुनौती देता या उनकी बातों को जब कोई संशोधित करने की कोशिश करता, तो ऐसा लगता था, जैसे उन्हें इसमें

बड़ा आनंद आ रहा हो। ऐसी स्थिति में वे सामनेवाले को किसी प्रतिद्वंद्वी की तरह नहीं ले रहे थे। बल्कि दोस्ताना अंदाज में 'हाँ' कहते और स्वत: ही सिर झुकाकर गौर करते कि क्या उन्होंने किसी चीज़ को नज़रअंदाज कर दिया है? इसके बाद वे ज़रूरत से ज़्यादा साधारणीकरण करने के लिए अपने आप पर ही हँस देते। जब कोई उन्हें किसी मुद्दे का दूसरा पहलू दिखाता, तो वे इसकी सराहना करते। स्पष्ट था कि उनके लिए किसी समस्या पर विचार या चर्चा करने का अर्थ परस्पर संवाद करना था।

उनकी एक और विशिष्टता थी, जिसे अनदेखा करना मुश्किल था: एक विद्वान और बुद्धिजीवी होने के बावजूद वे बड़े ही व्यावहारिक व्यक्ति थे। उनके उदाहरण रोज़मर्रा के जीवन में लागू की जानेवाली युक्तियों से भरे हुए थे। जैसे व्यवसाय प्रबंधन, फर्नीचर निर्माण (अपने घर का ज़्यादातर फर्नीचर उन्होंने खुद ही बनाया था) एक सामान्य घर खुद ही डिजाइन कर लेना, किसी कमरे को व्यवस्थित और सुंदर बनाना (जो अब एक इंटरनेट मीम बन चुका है) और शिक्षा के मामले में विशिष्ट रूप से, एक ऑनलाइन राइटिंग प्रोजेक्ट तैयार करना। जिसके माध्यम से अल्पसंख्यक छात्रों को एक प्रकार के मनोविश्लेषणात्मक व्यायाम की सुविधा दी जाती है, ताकि उन्हें स्कूल छोड़ने से रोका जा सके। इस प्रोजेक्ट से छात्रों को अपने अतीत, वर्तमान और भविष्य के साथ मुक्त रूप से संबद्ध होने का मौका मिलता है (अब इसे सेल्फ-ऑथरिंग प्रोग्राम के नाम से जाना जाता है)।

मुझे मध्य-पश्चिमी मैदानी इलाकों के वे लोग हमेशा से पसंद रहे हैं, जो वहाँ की खेती-बाड़ीवाली दुनिया से आए हों (जहाँ उन्होंने प्रकृति के बारे में सब कुछ सीखा हो)। या फिर ऐसे लोग, जो बहुत छोटे कस्बों से आए हों, जो रोज़मर्रा के काम की चीज़ों को अपने हाथों से निर्मित करना जानते हों, जो कठिन परिस्थितियों में रहे हों, खुद ही सब कुछ सीखते-समझते रहे हों और तमाम मुश्किलों के बावजूद उच्च शिक्षा के लिए यूनिवर्सिटी गए हों। मुझे ऐसे लोग, अपने उन शहरी समकक्षों से काफी अलग लगते हैं, जिनमें विवेक तो होता है, पर कुछ हद तक वे विकृत किस्म के भी होते हैं। उनके लिए उच्च शिक्षा हासिल करना पहले से ही तय होता है और इसीलिए वे उसका मूल्य नहीं समझते या उसे ज्ञान हासिल करने के अवसर के रूप में देखने के बजाय सिर्फ कॅरियर को बेहतर बनानेवाले एक तरीके के रूप में देखते हैं। जबकि पश्चिमी इलाकों से आए ये लोग काफी अलग थे, सब कुछ अपने बूते हासिल करनेवाले, हर चीज़ पर अपना अधिकार जमाने के बजाय उसे अपनी मेहनत से हासिल करने की कोशिश करनेवाले, व्यावहारिक, दोस्ताना और अपने उन शहरी साथियों की तुलना में कहीं ज़्यादा सरल, जो अपना ज़्यादातर समय घर के अंदर कंप्यूटर के सामने बिताते हैं। इस काऊबॉय मनोविज्ञानी को देखकर लगता था कि उसे किसी विचार की परवाह सिर्फ तभी होगी, जब वह विचार किसी न किसी रूप में किसी व्यक्ति के जीवन को बेहतर बनाने में सहायक होगा।

हम दोस्त बन गए। साहित्य के प्रति गहरा लगाव रखनेवाले मनोचिकित्सक और मनोविश्लेषक के रूप में मैं उनकी ओर इसलिए आकर्षित हुआ क्योंकि वे एक ऐसे चिकित्सक थे, जिन्होंने ढेरों किताबें पढ़कर बहुत सारा ज्ञान अर्जित किया था। साथ ही वे न सिर्फ आत्मीय रूसी उपन्यासों, दर्शन और प्राचीन पौराणिक कथाओं के दीवाने थे बल्कि उन्हें ऐसे देखते थे, मानो वे उनकी सबसे कीमती विरासत हों। हालाँकि इसके साथ ही उन्होंने व्यक्तित्व और स्वभाव जैसे विषयों पर शानदार सांख्यिकीय शोध भी कर रखे थे और न्यूरोसाइंस (तंत्रिका विज्ञान) का अच्छाखासा अध्ययन भी कर चुके थे। हालाँकि वे एक व्यवहारवादी के तौर पर प्रशिक्षित हुए थे, पर वे प्रबल रूप से मनोविश्लेषण की ओर आकर्षित थे। उनका ध्यान मुख्य रूप से सपनों, आर्कटाइप्स (आद्यरूपों या मूलरूप आदर्श) वयस्क जीवन पर बचपन के संघर्षों का गहन प्रभाव, रोज़मर्रा के जीवन में बचाव और तर्कसंगतता की भूमिका जैसे विषयों पर केंद्रित था। इसके साथ ही वे इस मामले में भी सबसे अलग थे कि टोरंटो यूनिवर्सिटी में शोध की ओर झुकाव रखनेवाले मनोविश्लेषण विभाग का हिस्सा होने के बावजूद वे पेशेवर रूप से एक मनोचिकित्सक के रूप में भी सक्रिय थे।

पीटरसन के घर की सजावट

इसके बाद जब भी मेरी उनसे मुलाकात होती, तो हमारी बातचीत हमेशा हँसी-मज़ाक और चुहलबाजी से ही शुरू होती। अल्बर्टा के अंदरूनी इलाके में बसे एक छोटे से कस्बे से आए जॉर्डन पीटरसन की किशोरावस्था बिलकुल 'फूबर' नामक फिल्म जैसी थी, उनके घर जाने पर आपका स्वागत कुछ इसी प्रकार होता था। अपने घर को उन्होंने और उनकी पत्नी ने मिलकर डिजाइन किया था। मैंने अपने जीवन में जितने भी मध्यमवर्गीय परिवारों

के घर देखे हैं, उनमें से यह घर सबसे आकर्षक और अधिक चौकानेवाला था। उनके घर में ढेरों कलाकृतियाँ, नक्काशीदार मुखौटे और अमूर्त तस्वीरें थीं। इसके साथ ही उनके पास सोवियत संघ द्वारा अधिकृत की गईं लेनिन और शुरुआती दौर के साम्यवादियों की मूल समाजवादी यथार्थवादी पेंटिंग्स् का विशाल संग्रह भी था, जो बाकी हर चीज़ पर भारी पड़ रहा था। सोवियत संघ के पतन पर दुनिया ने राहत की साँस ली थी। इसके कुछ ही समय बाद जॉर्डन पीटरसन ने इस प्रॉपेगेंडा (कल्पना) को बहुत ही सस्ते दामों में ऑनलाइन खरीदना शुरू कर दिया था। सोवियत क्रांतिकारी भावना की चापलूसी करनेवाली ये पेंटिंग्स् उनके घर की हर दीवार, छत और यहाँ तक कि गुसलखाने में भी लगी हुई थीं। पर जॉर्डन पीटरसन ने अपने घर में चारों ओर ये पेंटिंग्स् इसलिए नहीं लगा रखी थीं क्योंकि उन्हें सोवियत संघ से कोई अधिनायकवादी सहानुभूति थी। उन्होंने तो ऐसा इसलिए किया था ताकि वे पेंटिंग्स् उन्हें और बाकी हर किसी को यह याद दिलाती रहें कि दुनिया को आदर्शलोक बनाने के नाम पर सोवियत संघ में कैसे लाखों लोगों को मौत के घाट उतार दिया गया था।

दरअसल इस अलबेले घर को एक ऐसे भ्रम से 'सजाया' था, जिसने वास्तव में मानव जाति को करीब-करीब नष्ट कर दिया था। इसीलिए इसका अभ्यस्त होने में ज़रा समय लगता था। पर जॉर्डन की अद्भुत और अनूठी जीवनसाथी टैमी के चलते मेरे लिए यह आसान हो गया। उन्होंने न सिर्फ जॉर्डन की अभिव्यक्ति की इस असामान्य आवश्यकता को अपनाया बल्कि प्रोत्साहित भी किया! ये पेंटिंग्स् जॉर्डन के घर आनेवाले हर मेहमान को, अच्छाई के नाम पर बुरा करने की मानवीय क्षमता को लेकर उनकी चिंता की झलक दिखाने का काम करती थीं। इसके साथ ही ये इंसान द्वारा खुद को धोखा देने के मनोवैज्ञानिक रहस्य को भी दर्शाती थीं (भला यह कैसे संभव है कि कोई इंसान खुद को धोखा दे और फिर भी उसके परिणामों को भुगतने से बच जाए)। यह ऐसा विषय था, जिसमें मेरी दिलचस्पी भी उतनी ही थी, जितनी जॉर्डन की। इसके साथ ही हम दोनों एक अन्य विषय पर भी घंटों चर्चा किया करते थे, जिसे मैं एक कमतर समस्या कहूँगा (कमतर इसलिए क्योंकि यह दुर्लभ है)। वह समस्या है, बुराई के लिए बुराई करने की मानवीय क्षमता और दूसरों का जीवन बरबाद करके कुछ लोगों को मिलनेवाला आनंद, जिसे सत्रहवीं शताब्दी के अंग्रेज कवि जॉन मिल्टन ने अपनी कृति 'पैराडाइस लॉस्ट' में दर्शाया था।

और इसीलिए हम उनके अधोलोक नुमां रसोई में चाय पीते हुए चर्चा करते रहते, जहाँ की दीवारों पर उनका अलबेला कला संग्रह नज़र आता रहता था। यह संग्रह दरअसल दक्षिणपंथ या वामपंथ जैसी एकपक्षीय विचारधाराओं से परे जाने और अतीत की गलतियों को दोबारा न दोहराने की जॉर्डन की सच्ची कोशिश का एक प्रतीक था। कुछ समय बाद अशुभ सी पेंटिंग्स् से भरी दीवारोंवाली उनकी रसोई में जाकर चाय पीने और अपने-अपने पारिवारिक मुद्दों या हाल ही में पढ़ी किसी दिलचस्प किताब पर चर्चा करने में कुछ भी विचित्र नहीं रह गया। यह बस उस संसार में रहने जैसा हो गया, जो जैसा था, वैसा था।

इसके पहले आई जॉर्डन की पहली और इकलौती किताब 'मैप्स ऑफ मीनिंग' में उन्होंने विश्वभर की पौराणिक कथाओं में पाई जानेवाली सार्वभौमिक विषय-वस्तु पर अपनी गहन अंतर्दृष्टियाँ साझा की थीं। साथ ही उन्होंने यह वर्णन भी किया था कि कैसे संसार की हर संस्कृति ने कहानियों का सृजन किया, ताकि हम उस अराजकता का सामना करते हुए आखिरकार उसे समझ सकें, जिसमें हमें हमारी पैदाइश के समय ही धकेल दिया गया था। यह अराजकता ही वह सब कुछ है, जो हमारे लिए अज्ञात है। यह अराजकता हर वह अज्ञात क्षेत्र है, जिसमें हमने अब तक कदम नहीं रखा है और जिसे हमें पार करना ही होगा, चाहे वह बाहरी संसार हो या हमारा अपना जहन।

क्रमिक विकास, भावनाओं का तंत्रिका विज्ञान, कार्ल युंग की सर्वश्रेष्ठ बातें, सिग्मंड फ्रायड की कुछ बातें, नीत्शे, दोस्तोवस्की, सोल्जेनित्सिन, एलियाडे, न्यूमैन, पियागेट, फ्रे और फ्रैंकल की महान कृतियाँ, इन सबको संयुक्त रूप से प्रस्तुत करनेवाली जॉर्डन पीटरसन की पहली किताब 'मैप्स ऑफ मीनिंग' करीब दो दशक पहले प्रकाशित हुई थी। जब हम किसी चीज़ को समझ नहीं पाते, तो उसके चलते हमारी रोज़मर्रा की जिंदगी में आनेवाली आर्कटाइपल (आद्यप्रारूपीय) परिस्थितियों से इंसान और इंसानी मस्तिष्क कैसे निपटते हैं, इस बात को समझने के लिए जॉर्डन पीटरसन द्वारा प्रस्तुत विस्तृत दृष्टिकोण को इस किताब में दर्शाया गया था। इसकी सबसे बड़ी खूबी थी, यह स्पष्ट करना कि यह परिस्थिति हमारे क्रमिक विकास, डीएनए, मस्तिष्क और हमारी सबसे प्राचीन कहानियों में किस प्रकार निहित है। जॉर्डन ने अपनी इस किताब में बताया कि ये प्राचीन कहानियाँ आज तक इसीलिए बची हुई हैं क्योंकि ये आज भी हमें अनिश्चितता, अपरिहार्य व अज्ञात परिस्थितियों से निपटने का मार्गदर्शन देती हैं।

अभी आप जो किताब पढ़ रहे हैं, उसके कई गुणों में से एक यह है कि ये 'मैप्स ऑफ मीनिंग' का एक प्रवेश-बिंदु प्रदान करती है, जो दरअसल एक बेहद जटिल किताब थी। जब जॉर्डन उसे लिख रहे थे, तो वे दरअसल मनोविज्ञान के प्रति अपने दृष्टिकोण पर काम कर रहे थे। पर वह एक बुनियादी चीज़ थी क्योंकि भले ही हमारे जीन्स या जीवन के अनुभव कितने भी अलग-अलग हों या भले ही हमारे मस्तिष्क हमारे अनुभवों से बंधे हुए हों, फिर भी हम सबको अज्ञात से निपटना पड़ता है और हम सब अराजकता से व्यवस्था की ओर जाने का प्रयास करते हैं। इसीलिए इस किताब के कई नियमों में सौर्वभौमिकता का तत्व है, जो 'मैप्स ऑफ मीनिंग' पर आधारित हैं।

'मैप्स ऑफ मीनिंग' जॉर्डन की उस उत्तेजिक जागरूकता से निकली किताब थी, जो शीत युद्ध के समय एक किशोर के रूप में बड़े होने के चलते उनके अंदर पैदा हुई थी। उस समय अधिकांश मानवता अपनी विभिन्न पहचानों को बचाने के लिए पूरी पृथ्वी को विस्फोट में उड़ाने की कगार पर खड़ी नज़र आ रही थी। उनके अंदर यह समझने की प्रबल इच्छा जागृत हुई कि आखिर लोग अपनी 'पहचान' के खातिर हर चीज़ का बलिदान देने के लिए कैसे तैयार हो जाते हैं। साथ ही उन्होंने उन विचारधाराओं को समझने की ज़रूरत भी महसूस की, जिनके चलते अधिनायकवादी शासन ऐसे व्यवहार को उकसाता है कि वे अपने ही नागरिकों का नरसंहार करने लगते हैं। 'मैप्स ऑफ मीनिंग' में और इस किताब में भी, जॉर्डन अपने पाठकों को जिस मामले में सबसे ज़्यादा सावधान करते हैं, वह ये है कि ज़्यादातर विचारधाराओं से बचें, भले ही उन्हें 'बेचने' की कोशिश करनेवाला व्यक्ति कोई भी हो और इसके लिए वह किसी भी हद तक जाने को तैयार हो।

विचारधाराएँ दरअसल वे सरल विचार हैं, जो किसी ऐसे विज्ञान या दर्शन के रूप में सामने आती हैं, जिनका उद्देश्य संसार की जटिलता की व्याख्या करना है और जो संसार को संपूर्ण व बेहतरीन बनाने के तरीके सुझाती हैं। विचारधाराओं को माननेवाले दरअसल वे लोग होते हैं, जो अपनी अंदरूनी अराजकता पर काबू पाने से पहले ही यह जानने का दिखावा करते हैं कि संसार को 'बेहतर स्थान बनाने' का तरीका क्या है। उनकी विचारधारा उन्हें योद्धा की जो पहचान देती है, उससे वे अपनी अराजकता पर पर्दा डाल देते हैं। निश्चित ही यह घमंड की पराकष्ठा है। इस किताब की सबसे महत्वपूर्ण विषय-वस्तुओं में से एक यह है कि पहले 'अपने घर को व्यवस्थित करें।' यह कैसे किया जाए, इसके लिए भी जॉर्डन ने कई व्यावहारिक सुझाव दिए हैं।

विचारधाराएँ दरअसल सच्चे ज्ञान के ऐवज में प्रस्तुत किया गया विकल्प हैं और सत्ता हासिल करने के बाद वे हमेशा खतरनाक हो जाती हैं। क्योंकि 'मैं ही सबसे बड़ा ज्ञानी हूँ' किस्म के मूर्खतापूर्ण नज़रिए से अस्तित्व की जटिलता को कभी नहीं समझा जा सकता। जब विचारधाराओं से ग्रस्त लोगों के तरीके और प्रणालियाँ कारगर सिद्ध होने के बजाय असफल हो जाते हैं, तो वे अपनी गलती मानने के बजाय उन लोगों को दोषी ठहराने लगते हैं, जो उनके सरलीकृत तरीकों की कमियों को पहले ही समझ गए थे। टोरंटो यूनिवर्सिटी के एक और महान प्रोफेसर लुईस फेयूर ने अपनी किताब 'आइडियोलॉजी एंड आइडियोलॉजिस्ट' में कहा है कि 'विचारधाराएँ उन्हीं धार्मिक कहानियों को दोहराती हैं, जिनकी जड़ें खोदने का वे दावा करती हैं।' पर ऐसा करते हुए वे इन कहानियों की कथात्मकता और उनकी मनोवैज्ञानिक गहनता को खत्म कर देती हैं। साम्यवाद ने अपने मूल विचार 'चिल्ड्रेन ऑफ इजराइल इन इजिप्ट' की कहानी (ओल्ड टेस्टामेंट, हिब्रू बाइबिल और तोराह की किताबों में वर्णित 'द एक्सोडस' की कथा) से उधार लिए हैं। जिसमें गुलाम वर्ग है, अमीर उत्पीड़क है, लेनिन जैसा एक नेता है, जो विदेश जाकर लोगों को गुलाम बनानेवालों के साथ रहता है और फिर उन गुलामों को एक नई दुनिया (आदर्शलोक - जहाँ गुलाम और मजदूर वर्ग की ही तानाशाही हो) में ले जाने के लिए उनकी अगुवाई करता है।

विचारधारा को समझने के लिए जॉर्डन ने न सिर्फ सोवियत गुलाग (सोवियत संघ में लेबर कैंप चलानेवाली सरकारी संस्था) का बल्कि होलोकॉस्ट (द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान नाजियों द्वारा यूरोपीय यहूदियों का नरसंहार) और नाजीवाद के उदय का भी गहन अध्ययन किया है। मैं आज तक अपनी पीढ़ी के किसी ऐसे व्यक्ति से नहीं मिला, जो जन्म से ईसाई हो पर यूरोप में यहूदियों के साथ हुए बर्ताव से इतना दु:खी रहा हो और जिसने इसके कारणों को समझने के लिए जी-तोड़ मेहनत की हो। मैंने भी इस विषय पर गहन अध्ययन किया है। मेरे पिता स्वयं ऑश्विज के यातना शिविर में बंदी होने के बावजूद किसी तरह जीवित बच गए थे। मेरी दादी भी अपनी प्रौढ़ावस्था के बावजूद डॉ. जोसेफ मेंजेल के विरोध में खड़ी हो गई थीं, जिसने अपने पीड़ितों पर बड़े ही क्रूरर प्रयोग किए थे। वे भी ऑश्विज के यातना शिविरों में बंदी होने के बावजूद जिंदा बच गई थीं क्योंकि उन्होंने उस

डॉक्टर के एक आदेश का पालन नहीं किया था। दरअसल उस क्रूरर व्यक्ति ने एक बार बुजुर्ग, बीमार और कमज़ोर बंदियों को गैस चैंबर में भेजकर मारने के उद्देश्य से उन्हें एक पंक्ति में खड़ा होने का आदेश दिया था। पर मेरी दादी चुपके से उस पंक्ति से निकलकर अपेक्षाकृत युवा बंदियों की पंक्ति में जाकर खड़ी हो गईं और जीवित बच गईं। इसी तरह एक अन्य मौके पर उन्होंने खुद को गैस चैंबर में मरने से बचाया था। दरअसल उन्होंने किसी को अपने हिस्से का खाना देकर बदले में उससे बालों का खिजाब ले लिया था, ताकि अपने सफेद बालों को काला कर लें और बूढ़ी न दिखें क्योंकि अगले ही दिन बूढ़े लोगों को गैस चैंबर में भेजने की योजना थी। उनके पति यानी मेरे दादा जी भी मोथाउसेन के यातना शिविर में बंदी होने के बावजूद जिंदा बच गए थे। लेकिन अपनी आज़ादी के एक दिन पहले जब उन्हें लंबे समय बाद ठोस भोजन मिला, तो पहला टुकड़ा खाते ही उनका दम घुट गया। मैं इन बातों का जिक्र इसलिए कर रहा हूँ क्योंकि इन घटनाओं के सालों बाद जब मैं और जॉर्डन दोस्त बने, तो मैंने देखा कि वे फ्री स्पीच (बोलने की आज़ादी) के प्रति खासा उदारवादी रवैया रखते हैं पर इसके बावजूद वामपंथी अतिवादी उन पर दक्षिणपंथी कट्टरता का आरोप मढ़ते फिर रहे थे।

मैं बहुत ही संयम पूर्वक यह कहना चाहूँगा कि जॉर्डन पर ऐसे आरोप मढ़ने से पहले उन अतिवादियों ने अपने आरोपों की वैधता सुनिश्चित करने के लिए ज़रूरी परिश्रम नहीं किया। मेरे परिवार के सदस्यों ने जो कुछ भी झेला है, उसके बाद इंसान दक्षिणपंथी कट्टरता के प्रति न केवल बेहद सचेत हो जाता है बल्कि इससे भी ज़्यादा, वह ऐसे लोगों को पहचानना भी सीख जाता है, जिनके अंदर ऐसी कट्टरता का मुकाबला करने के लिए ज़रूरी समझ, इच्छाशक्ति और साहस हो। जॉर्डन पीटरसन ऐसे ही व्यक्ति हैं।

मैंने राजनीतिक विज्ञान के अध्ययन के अलावा अचेतन मन, मानसिक प्रक्षेपण, मनोविश्लेषण, समूह मनोविज्ञान, मनोरोग और इंसानी मस्तिष्क की रिग्रेसिव (प्रतिगामी) क्षमता जैसे विषयों का अध्ययन करने का निर्णय लिया था। इसका एक बड़ा कारण यह था कि मैं स्वयं नाजीवाद, अधिनायकवाद और पूर्वाग्रह के उदय को समझने के आधुनिक राजनीति विज्ञान के प्रयासों से बेहद असंतुष्ट था। जॉर्डन ने भी राजनीति विज्ञान को इसी वजह से छोड़ा था। समान विषयों में दिलचस्पी होने के बावजूद हम 'जवाबों' के मामले में एक-दूसरे से हमेशा सहमत नहीं होते (इसके लिए ईश्वर का शुक्रिया) पर हमारे बीच इस बात पर करीब-करीब पूर्ण सहमति होती है कि सवाल क्या होने चाहिए।

हमारी दोस्ती सिर्फ सहमत और असहमत होने तक ही सीमित नहीं है। यूनिवर्सिटी में अपने साथी प्रोफेसरों की कक्षाओं में बैठना मेरी आदत थी। इसीलिए मैं जॉर्डन की कक्षाओं में भी बैठ चुका हूँ, जो हमेशा ढेर सारे छात्रों से भरी रहती हैं। मैं इन कक्षाओं में वह देखता था, जो इंटरनेट पर अब तक लाखों लोग देख चुके हैं: एक शानदार वक्ता, जो अपने ज्ञान की गहनता से अक्सर लोगों को अचंभित कर देता है और किसी बेहतरीन जैज़ संगीतज्ञ की तरह लय बाँधते हुए विभिन्न विषयों पर बोलता है। कभी-कभी वह मैदानी इलाके के किसी उत्साही उपदेशक जैसा लगता है (जो धार्मिक प्रचार नहीं करता पर जिसके व्यक्तित्व में किसी उपदेशक जैसा जुनून है और वह ऐसी कहानियाँ सुनाना जानता है, जो विभिन्न विचारों पर भरोसा करने या न करने के कारण खेले जानेवाले जीवन के दाँव-पेंच के बारे में बताती हैं)। और फिर वह उतनी ही आसानी से वैज्ञानिक अध्ययनों की एक पूरी श्रृंखला का बेहद व्यवस्थित सारांश तैयार करने निकल पड़ता है। जॉर्डन अपने छात्रों को और अधिक चिंतनशील बनाने में माहिर हैं। वे छात्रों को और उनके भविष्य को बड़ी ही गंभीरता से लेते हैं। उन्होंने छात्रों को दुनिया की सबसे महान किताबों का सम्मान करना सिखाया है। वे मनोविश्लेषण के अपने पेशेवर जीवन से जुड़े प्रबल उदाहरण देते हैं, अपने बारे में (उचित ढंग से) खुलासे करते हैं, यहाँ तक कि अपनी कमजोरियों को भी सबके सामने रख देते हैं और क्रमिक विकास, मस्तिष्क व पौराणिक कथाओं के बीच आकर्षक कड़ियाँ जोड़ देते हैं। एक ऐसी दुनिया में, जहाँ (रिचर्ड डॉकिन्स जैसे विचारकों द्वारा) छात्रों को क्रमिक विकास व धर्म को एक-दूसरे के विरोधी के रूप में देखना सिखाया जाता है, वहाँ जॉर्डन ने अपने छात्रों को बताया कि प्राचीन मेसोपोटामिया की पौराणिक कथाओं के मुख्य नायक गिलगोमेश, मिश्र की पौराणिक कथाओं, गौतम बुद्ध के जीवन और बाइबिल जैसी प्राचीन कहानियों में छिपे ज्ञान और गहन मनोवैज्ञानिक आग्रह की व्याख्या करने में क्रमिक विकास किस प्रकार सहायक है। उदाहरण के लिए, उन्होंने बताया कि कैसे अज्ञान की ओर स्वेच्छा से यात्रा करना - कहानियों में नायक द्वारा की जानेवाली खोज - उस सार्वभौमिक कार्य का प्रतिबिंब है, जिसे करने के लिए हमारे मस्तिष्क का क्रमिक विकास हुआ है। जॉर्डन इन कहानियों का सम्मान करते हैं। वे उनमें कमियाँ ढूँढनेवालों में से नहीं हैं। न ही वे कभी यह दावा करते हैं कि उन्होंने इन प्राचीन कहानियों में छिपा सारा ज्ञान हासिल कर लिया है। अगर वे पूर्वाग्रह या